आपने लिखा

संदर्भ अंक 79 में शायद किसी गलती के कारण अथवा सम्पादक मण्डल की उदासीनता के कारण 'स्रोत' पत्रिका का लेख 'सवालीराम' के अन्तर्गत छप गया है। ऐसा लगता है कि बाल विज्ञान कार्यक्रम के बन्द होने के साथ ही एकलव्य के कर्ता-धर्ताओं ने बाल मनोविज्ञान का खयाल रखना भी छोड़ दिया है।

जवाब लिखते समय प्रश्नकर्ता की उम्र, उसकी समझ का स्तर, उसके जानकारी के स्रोत आदि का भी खयाल रखना चाहिए। केवल जानकारी का पिटारा खोल देने से बच्चों की शंकाओं का समाधान नहीं किया जा सकता है।

क्या आप सोचते हैं कि एक नौ वर्ष की बच्ची परमाणु की अवधारणा, रासायनिक क्रिया, निश्चित अनुपात का नियम, ब्राउनियन गति आदि के बारे में कुछ समझ रखती होगी?

किसी ज़माने में सवालीराम द्वारा लिखे गए जवाब पर एकलव्य में सामूहिक चर्चा होती थी और सहमति की मुहर लगने के बाद ही पत्र को बच्चे के पास भेजने के लिए हरी झण्डी मिलती थी। इस प्रक्रिया में 'सवालीराम' का भी ज्ञानवर्धन होता था, भूल-सुधार का मौका मिलता था और बच्चे के पास भी सही जानकारी पहुँचती थी।

सुधा हर्डीकर,
होशंगाबाद, म.प्र.

एक लम्बी अवधि के उपरान्त मैं आज 'संदर्भ' के 79वें अंक पर अपनी प्रतिक्रिया सम्प्रेषित करने का प्रयास कर रहा हूँ-

'संदर्भ' में ऊषा मुकुन्दा का लेख पुस्तकालय के उपयोग के बारे में रोचक गतिविधियाँ लिए है, जिससे पुस्तकालय विज्ञान से अनभिज्ञ मुझ जैसे अध्यापक को, (जो यह मानते या जानते हैं कि पुस्तकालय का मतलब बच्चों को पुस्तकें पढ़ने के लिए देना और फिर वापस लेना है), आज समझ में आया कि यहाँ भी नवाचार और रोचक गतिविधियाँ हो सकती हैं। लेकिन दुःख की बात यह है कि आज या तो पुस्तकालय शिक्षक होते ही नहीं या फिर यह पुस्तकालय दूसरे ही अर्थ में पहाड़ों पर है...यानी बच्चों की पहुँच से दूर। फिर भी, अनेक धन्यवाद ऊषा जी।

'सवालीराम' के सवाल का उत्तर भी सवाल बनकर ही रह गया। शायद वह बच्ची सिद्दीका भी सन्तुष्ट नहीं हो पाएगी...क्योंकि आखिर यही साबित हुआ कि यह एक काल्पनिक सत्य है जो कभी-न-कभी असत्य भी साबित हो सकता है।

राघवेन्द्र गडगकर ने अपनी शोध प्रणाली को विस्तार से बताकर नए शोधार्थियों की राह आसान कर दी। इस साहस के लिए उन्हें धन्यवाद।

मोहम्मद उमर ने 'नन्हे हाथ लिखना सीखने की ओर' में बहुत प्रासंगिक प्रकरण पर अपने अनुभव एवं विचारों को प्रस्तुत किया है। परन्तु, चूँकि शायद वे स्वयं कोई विद्यालयी शिक्षक नहीं हैं इसलिए वे एक सामान्य समस्या को आर.टी.ई. की समस्या मान रहे हैं जबकि यह समस्या नहीं बल्कि एक प्रारम्भिक विद्यालय की पहचान है जहाँ सभी बच्चे पहली बार ही आते हैं। उमर साहब ने चित्रों द्वारा शिक्षण

की जो विधि बताई है वह सराहनीय और अनुकरणीय है। यह बात भी कोई नई तो नहीं पर इसे जानने और अपनाने वाले बहुत कम हैं। सरकार भी आज चित्रकला जैसे विषय को फालतू मानकर हटा चुकी है। गुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर की संस्था शान्ति निकेतन में यही पद्धति अपनाई जाती थी। वहाँ के विद्यार्थी प्रो. देवीप्रसाद ने इस विषय पर एक पुस्तक 'शिक्षा का वाहन कला' भी लिखी है। चित्रकारी करवाते हुए बच्चों के मनोविज्ञान को हम समझ सकते हैं...जिस प्रकार भाषा सिखाने में बच्चा समग्रता के सिद्धान्त को अपनाता है उसी प्रकार वह चित्र बनाते हुए भी पूरा चित्र ही बनाता है न कि उसके अंग-प्रत्यंग के चित्र, स्वभावतः नहीं बनाता है। यह आश्चर्यजनक बात है...इससे यह कयास मिलता है कि उसे 'क' कबूतर के स्थान पर सीधे ही कबूतर या कप ही क्यूँ न सिखाया जाए। प्रो. कृष्णकुमार ने 'बच्चों की भाषा और अध्यापक' नामक पुस्तक में इस विधि का विस्तार से वर्णन किया है।

माधव केलकर ने 'जब बच्चे गाली दें तो...' में एक सामान्य और बहुलतापूर्ण समस्या को लेकर जो घटना व्यक्त की है, मैं उससे सहमत हूँ। मैं भी प्रायः यही करता हूँ...परन्तु विद्यालय में जिस पृष्ठभूमि और घरेलू वातावरण से बच्चे आते हैं वहाँ इस समाधान का शाश्वत परिणाम तो नहीं मिलता। पर यह ज़रूर है कि गाली की शिकायतें बार-बार नहीं आतीं और शिकायत लेकर आने में बच्चे थोड़ा झिझकते हैं...।

मुझे 'संदर्भ' के इस अंक में सर्वाधिक रोचक और प्रेरणादाई कुछ लगा तो वह है रघुनन्दन त्रिवेदी की 'स्कूल गाथा'। शिक्षकों की करनी और कथनी के भेद को उन्होंने जिस कहानी शैली में प्रस्तुत किया वह मेरे लिए अभूतपूर्व और मर्मस्पर्शी था, उन्हें साधुवाद। हालाँकि, सभी शिक्षक ऐसे नहीं होते परन्तु पुराने समय में शिक्षक केन्द्रित शिक्षण विधियों और विद्यालयों का वातावरण ऐसा ही होता था...उस समय अधिकांश शिक्षक रूढ़िवादी और एकाग्रही होते थे। हमेशा यही होता आया है कि हम बच्चों से बड़ों जैसे व्यवहार की अपेक्षा करने लगते हैं, जो कि एक प्रकार से अत्याचार ही है।

आदरणीय मन्नू जी को मेरी विनम्र श्रद्धांजली। अन्ततः इस अंक में इतनी अच्छी सामग्री देने के लिए धन्यवाद।

रमेश जांगिड़, शिक्षक
ग्राम पोस्ट, भिरानी, तहसील-भादरा
ज़िला-हनुमान गढ़ (राजस्थान)

शैक्षणिक संदर्भ के अंक वेबसाइट पर भी पढ़ सकते हैं। कृपया विज़िट कीजिए
www.eklavya.in